आईनों में देखिए

ग़ज़लें और नज़्में

परम श्रद्धेय
श्री हरीश जी भादानी
को
सादर...
राजेन्द्र स्वर्णकार
18/04/2004

राजेन्द्र स्वर्णकार

आईनों में देखिए

ग़ज़लें और नज़्में

राजेन्द्र स्वर्णकार

विकास प्रकाशन,
4, चौधरी क्वार्टर्स, स्टेडियम रोड, बीकानेर



राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के
आंशिक आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक
विकास प्रकाशन
4, चौधरी क्वार्टर्स, स्टेडियम रोड़,
बीकानेर – 334001
दूरभाष – 2541508
संस्करण
2004
मूल्य
सौ रूपये
आवरण
स्वप्ना राजेन्द्र स्वर्णकार
कम्पोजिंग
स्वाति कम्प्यूटर्स
धोबी–धोरा, सूरसागर के पास, बीकानेर
फोन – 2204142
मुद्रक
कल्याणी प्रिन्टर्स, बीकानेर

AAEENON MEIN DEKHIEY
By: Rajendra Swarnkar
Rs. 100.00

अनुक्रम

ग़ज़लें

नज़्में

अक्सर वो सब सोचा है
जो सच है, जो धोका है

नज़र कभी ना आया वो
यूं... पहलू में रहता है

उसके रुख़ पे सितारों का
कारवां कोई ठहरा है

ख़ुदा कहीं खो ना जाए
दिल में थोड़ा खटका है

चांद के शाने'[1] सर रख कर
सूरज सपने बुनता है

मौसम मस्त मुसव्विर;[2] जो
सबके कपड़े रंगता है

राजेन्द्र ! अशआर तेरे
ताज़ा हवा का झोंका है

---

[1] शाने' — शाने पर (कन्धे पर)
[2] मुसव्विर — चित्रकार

अच्छी थी... खराब थी
अपनी, एक शराब थी

दोस्ती हर दोस्त की
अस्ल में सराब[1] थी

स्याह–स्याह सी मेरी
किस्मत की किताब थी

ज़िंदगी भी क्या थी, बस
मौत का नक़ाब[2] थी

दुश्वारी मेरे लिए...
उम्र भर बेताब थी

हस्रते – मंज़िल[3] भी बस
एक सुनहरा ख़्वाब थी

✍

---

[1] सराब – मृग मरीचिका
[2] नकाब – मुखावरण
[3] हस्रते–मंजिल – गतव्य तक पहुचने की इच्छा

अपनी राह बदल ले चांद
पतली गली निकल ले चांद

अवसर तार्कें कई धाड़वी
उनसे पल्लू करले चांद

निगल जाएंगी नज़रें तुझको
सूरत अपनी ढक ले चांद

बहुत सयाना है ना तू तो
लाज, लाज की रख ले चांद

शौक बहुत है, तो आ! आकर
आग ज़मीं की चख ले चांद

किसी रोज राजेन्द्र के घर जा
उसके साथ सुलग ले चांद

अब तुम भी मुझसे खेलो
दो–चार इम्तिहां ले लो

तौफीक[1] है अब सहने की
इल्ज़ाम[2] मुझे जो – दे लो

ये खंजर पड़ा ये सीना
अब रहम को दूर धकेलो

शर्म मेरी आंखों से
लो झुका ली गर्दन; ये लो

अब... किससे क्या कह दूंगा
ये सीए होंठ – अरे लो

---

[1] तौफीक – सामर्थ्य
[2] इल्जाम – आरोप

अरअरा कर गिर न जाए अहम की दीवार, सुन !
हैं शहर में और भी कुछ सुख़नवर[1] दमदार, सुन !

सिर्फ़ दाना[2] ही नहीं; नादां[3] भी रखते हैं हुनर,
सुन ! तबीअत से मेरे अशआर भी दो–चार सुन !

है मेरा किरदार भी सुकरात – ईसा की तरह,
राह पर मेरी नज़र रखना रसन–ओ–दार[4] सुन !

जुर्म है इंसानियत मेरा... ऐ दौरे–बेअदब !
हर सज़ा का, सामने हाज़िर खड़ा हक़दार, सुन !

गीत अम्नो–प्यार के राजेन्द्र गाता है इधर,
सुन ! हवा की तर्जुमानी बैठकर उस पार सुन !

अर्श[5] ने बांहें पसारीं बर्क़[6] ठंडी हो गई,
झूम कर राजेन्द्र के संग गा उठे कोह्सार,[7] सुन !



---

[1] सुख़नवर – कवि, शाइर
[2] दाना – सुविज्ञ
[3] नादां – अनभिज्ञ
[4] रसन–ओ–दार – सूली और फांसी
[5] अर्श – आकाश
[6] बर्क़ – बिजली
[7] कोह्सार – पहाड़

आंख खुलते ही अश्क भर आए
दर्द फिर से कई उभर आए

जा सके फिर ना जो कभी आकर
एक दिन ऐसी भी सहर[1] आए

खूब आते हैं यां सियासतदां[2]
काश इक रहबर[3] मो'तबर[4] आए

उस घड़ी जश्ने–ईद होने दें
मेरे मरने की जब खबर आए

कत्ल हो जाएं, उफ़ मगर न करें
सबको राजेन्द्र सा हुनर आए

---

1 सहर – भोर
2 सियासतदा – राजनीतिज्ञ
3 रहबर – पथ प्रदर्शक
4 मो'तबर – विश्वस्त/भरोसे लायक

आंखें मूंद' यक़ीं करने वाले ! यूं बेपरवाह न हो
शोर बहुत सुनते हो जिसका, वह झूठी अफ़्वाह न हो

अक्सर गिरवी पड़े मिले हैं चांद अंधेरों के घर में
जो पूरनमासी लगती वो रात अमावस स्याह न हो

जाने कितने तू मज़हब के नाम पे करतब करता है
कहीं ख़ुदा की नजर में इक–इक वो संगीन गुनाह न हो

मुंह पर सुनकर दाद[1], ओ नादां शाइर ! यूं महजूज़[2] न हो
मुमकिन है वह शोर हो गाली, वह तेरी वा'वाह न हो

दाद – प्रशंसा
महजूज – आत्म मुग्ध

आदमी को आदमी तो होना चाहिए
दूसरों के ग़म मे भी तो रोना चाहिए

घर पड़ौसी का जले; वेफिक्र ना रहें
इस क़दर ग़ाफ़िल[1] होकर ना सोना चाहिए

जो फ़ज़ा[2] को ज़हर से भर दे जवां होकर
बीज ऐसा, हाथ से ना बोना चाहिए

ग़लतियां तो आदमी से हो ही जाती हैं
वक़्त रहते ग़लतियों को धोना चाहिए

क्या से क्या राजेन्द्र हो गया खबर नहीं
खुद में इतना भी साहिब, ना खोना चाहिए

[1] गाफिल – असावधान
[2] फजा – वातावरण/माहौल

इंसां बनकर जीने का खुद से ही मेरा वादा था
रोज़-रोज़ मरने का लेकिन मेरा कहां इरादा था

दुनिया तो दुनिया है आखिर, किसकी यह किस रोज हुई
शायद मैं ही जज़्बाती[1], हद से भी थोड़ा ज़्यादा था

सब बेगाने, सांस पराई, लेकिन दिल तो मेरा था
कुछ समझाता; क्यों मेरी जां लेने पर आमादा था

वफ़ा[2] मुरव्वत[3] ही क्यों; जिससे जो पाया— लौटा देता
समझ न पाया वो हिसाब मैं, जो सीधा था सादा था

सांस तलक किसी और हाथ में क्या कुछ कोई कर लेता
बिछी हुई शतरंज वक़्त की राजेन्द्र इक प्यादा था



[1] जज़्बाती – भावुक
[2] वफ़ा – किसी का साथ तन-मन-धन से निभाना
[3] मुरव्वत – शील/संकोच/लिहाज

इक रोज़ मैं अपने हुकूक़[1] छीन कर लूंगा
मैं कंकड़ों से लालो–दाने[2] बीन कर लूंगा

तक़दीर ! लाख दुश्मनी से पेश आ, फ़िर भी
जब ठान लूंगा तुझको हमनशीन[3] कर लूंगा

इक–एक ग़म इक–एक क़तरा[4], रख रहा महफ़ूज़[5]
इन दौलतों से देखना, दफ़ीन कर लूंगा

सफ़्फ़ाक[6] सियह[7] तीरगी[8] ! तुझसे है ये वादा
मैं खुलूस[9] से जहां को नगमग़ीन[10] कर लूंगा

नक़्शा संवर जाए जरा–सा; देखना कैसे
बेहतर को खुद–ब–खुद मैं बेहतरीन कर लूंगा

टूटेगे दावे–मर्तबान... हंस पड़ूंगा मैं
बच्चे–सा खुद को उस घडी ज़हीन[11] कर लूंगा

ﷺ

---

[1] हुकूक – अधिकार
[2] लालो–दाने – रत्न
[3] हमनशीन – मित्र
[4] कतरा – अश्रु/बिंदु
[5] महफूज – सुरक्षित
[6] सफ्फाक – रक्तपाती
[7] सियह – काला
[8] तीरगी – अंधेरा
[9] खुलूस – निश्छलता/सच्चाई
[10] नगमगीन – जाज्वल्यमान्
[11] जहीन – समझदार

इन चराग़ों को हौसला दे दे
चलने वालों को रास्ता दे दे

हर सफ़्हा[1] हमने अश्कबार[2] पढ़ा
एक किस्सा तो ख़ुशनुमा दे दे

बांट दे मालो–ज़र ज़माने को
बस हमें दिल से इक दुआ दे दे

उम्र तूफ़ां के दरमयां गुज़री
अब कनारे दे, नाख़ुदा दे दे

रह लिए ख़ूब, अब तो चलते हैं
मुस्कुरा कर तू अलविदा दे दे

बाद राजेन्द्र के भी आते रहें
एक इंसानी सिलसिला दे दे



---

[1] सफ़्हा – पृष्ठ
[2] अश्कबार – अश्रुदायी

इस बस्ती वाले तो यूं ही प्यार–मुहब्बत करते हैं
ज़ख्म किसी के सहला कर ये, और भी गहरा करते हैं

आग लगाकर खेल देखना ही तो इनकी आदत है
चिंगारी खुद रख कर हौले–हौले पंखा झलते हैं

मौसम भी हैरां है देख मिज़ाज[1] यहां के लोगों का
यकजां[2] थे जो अभी; अभी पहचान से साफ़ मुकरते हैं

एहसानों का क़र्ज़ चुकाना, यार ! सीख आकर इनसे
छांह जहां पाते, उस दर पर ही ये आग उगलते हैं



[1] मिजाज – प्रकृति
[2] यकजां – घनिष्ठ

एक ही हुनर है उसमें, एक ही कमाल है
उसकी जान–चीन का दायरा विशाल है

हडप ली पड़ौसियों ने मुल्क की कितनी ज़मीं
और... सिर्फ़ चार इंच का तुम्हें मलाल है

रोज़ दीवाली है उनकी, रोज़ उनकी ईद है
बाढ़ है, भूकंप है, सूखा कहीं अकाल है

हो ज़रा इंसानियत बर्ताव में, बस और क्या
हाथ फैलाकर मेरा बस एक ही सवाल है



कहने को वह मुझसे मेरा सब कुछ लूट गई है
उसकी देह की गंध मगर, सांसों में छूट गई है

उग आए हैं स्मृतियों की झील में कंवल सुनहरे
हरियल फसलों में सतरंगी कोयल कूक गई है

चातक–नयन हृदय पोखर; भड़की प्यास समंदर–सी
जबसे मरु कंठों में उसके नेह की घूंट गई है

उससे मिलने तक इमारत बिलकुल सही–सलामत थी
मिली; जुदा वह हुई – हवेली सब्र की टूट गई है

कहां थी इतनी हलचल ? मन – मरुभूमि शांत पड़ी थी
उसने टोना क्या किया – ज्वालामुखी फूट गई है

पास थी वह, तब... जैसे, सारा जग मेरा अपना था
उसने आंखें क्या बदलीं – छाया तक रूठ गई है

सदियों–सदियो जन्मों–जन्मों एक देह इक जान थे हम
इसी जन्म उस विधना की क्यों लेखनी चूक गई है

कांटों से नहीं मेरे पैरों में छाले पड़े हैं फूलों से
समझौते करता, जी लेता; मैं मारा गया उसूलों[1] से

खुद मैंने खुल्ला छोड़ दिया दिल का दरवाज़ा सबके लिए
बरबाद हुआ हूं मैं बस ... अपनी ऐसी ही कुछ भूलों से

हद से भी जियादा फूंक-फूंक 'पग' धरने से ये हाल हुआ
कश्ती मेरी तूफ़ां से कम डूबी ज़्यादा मस्तूलों[2] से

लूटने वाले लूट गए, थे कौन ? बताऊं किस मुंह से
रहज़न[3] तो छुप न सके रिश्तों की धूल में उठे बगूलों से



[1] उसूल – कायदे/नियम/सिद्धांत
[2] मस्तूल – जहाज का वह खंभा जिसमें झंडा (मरुत्पट) बांधते हैं
[3] रहजन – लुटेरे

कागज़ों मे सिमटने लगे
लोग टुकडों में बंटने लगे

लुट गई है गुलों की रियासत[1]
खार–कांटे महकने लगे

जलजले[2] से मकां[3], बस हिला था
और मकीं[4] सब सरकने लगे

आईनो पे रहम खाइएगा
आपसे वे सहमने लगे

रेग़ज़ारों[5] ने अंगड़ाइयां लीं
तो समंदर दहलने लगे

चुप हो घर में रहो राजेन्द्र
होम से हाथ जलने लगे

---

[1] रियासत – सत्ता/जागीरदारी
[2] जलजला – भूकंप
[3] मकां – घर
[4] मकीं – घर में रहने वाले
[5] रेगजार – मरुस्थल

किसके आगे जाकर अपने जी का हाल सुनाइए
पत्थर हैं दुनिया वाले; गर चाहें, सर टकराइए

ख़ूं के रिश्तों में भी अब ना कशिश[1] रही ना हमदर्दी[2]
जाकर किस दुनिया में हमदम[3] और हमराज़[4] बनाइए

और बहुत कुछ है दुनिया में फ़ुर्सत औ' जज़्बात[5] नहीं
कहां तलक, कब, कुछ भी, किससे, कैसे, कोई निभाइए

खुदग़रजी[6] नाआश्नाई[7] घुली हवाओं में; फिर क्यूं
दिल की बात जुबां पर लाकर अपना ख़ून जलाइए

---

1 कशिश – आकर्षण/खिंचाव
2 हमदर्दी – संकट के समय सहानुभूति
3 हमदम – हर समय का साथी
4 हमराज – मन की बात जानने वाला
5 जजबात – भावनाएं
6 खुदग़रजी – स्वार्थ सिद्धि
7 नाआश्नाई – पहचानते हुए भी न पहचानना

कुछ तो उसमें बात थी, वरना... मैं ऐसा ग़ाफ़िल[1] ना था
मुझसे, मुझे चुराने वाला बिल्कुल नाक़ाबिल[2] ना था

खुद–ब–खुद[3] ही मेरी कश्ती ठहर गई क्यों उसी जगह
खबर मुझे थी जब कि, हरगिज़ वो मेरा साहिल[4] ना था

दिल क्या, मुझसे जानबूझ कर फूल भी तोड़ा नहीं गया
उसकी हर ज़िद मानी है, गो मैं उससे माइल[5] ना था

मेरे घर अक्सर आया वह, मेहमां जब–तब हुआ मेरा
उसकी महफ़िल जवां हुई तब मैं उसमें शामिल ना था

सोग; बेवफ़ाई का मुझसे नहीं मनाया जाएगा
कभी ज़माना मेरी नज़र में थोडा भी आदिल[6] ना था

बातें बेशक बड़ी–बडी करने में माहिर लगता था
हकीकतन[7] वह लफ़्ज का ज़ादूगर इतना फाज़िल[8] ना था

ग़ज़लगोई[9] के लिए मुकर्रर[10] हुए जिन्हें इन्आम[11] सभी
पैमानों की नज़र में उनका शे'र कोई कामिल[12] ना था

लिखते हैं लिखने को मुसन्निफ़,[13] पढ़ते हैं पढ़ने वाले
ना पढने का मतलब, लिखने का भी कुछ हासिल ना था

---

1 ग़ाफ़िल – असावधान/संज्ञाशून्य
2 नाकाबिल – अयोग्य
3 खुद–ब–खुद – अपने आप
4 साहिल – तट
5 माइल – आसक्त
6 आदिल – न्यायवादी
7 हकीकतन – यथार्थत
8 फाजिल – सुशिक्षित
9 गज़लगोई – गज़ल कहना
10 मुकर्रर – तय/निश्चित
11 इन्आ[illegible] – पुरस्कार
12 कामिल – पूर्ण
13 मुसन्निफ – रचयिता

कोशिशें जारी हैं हमको बरगलाने की
हम भी आदत खो चुके उंगली उठाने की

ज़िंदगी बीवी के हाथों की रजाई है
लीर को फ़ुर्सत नहीं तीबे लगाने की

सर ही घर धर शहर भर हम घूम जब आए
मिल गई शीशे को मोह्लत[1] मुस्कुराने की

कोयला मंडी से लौटे हैं सुबह मिलिए
तब धुले होंगे; नवाज़िश[2] गुस्लख़ाने[3] की

रतजगे कर लैम्प का कर्ज़ा चढ़ा लिया
और सनद[4] अब भी नहीं आखर[5] कमाने की

मोह्लत – अवकाश
नवाजिश – कृपा
गुस्लखाना – स्नानघर
सनद – प्रमाण/मिसाल
आखर – शब्द

खंडहर आख़िर खंडहर है, गो[1] लाख क़ीमती पत्थर है
सांसें हों – इंसां, इंसां है, वरना गारा–कंकर है

हमसे मत पूछो तुम ख़ुद ही कभी आईने से मिल लो
सुनते हैं लोगों से, कॅ चेहरा भी दिल का संगज़र[2] है

निभा रहे हैं धोखे खा–खा कर हर रिश्ते को यूं ही
शहद–सनी मुस्कान जहां है, वहीं – पता है, ख़ंजर है

रो'कर जी हल्का कर लेने का कुछ हमको भी हक है
बेशक प्यार से ठुकराया होगा, ठोकर तो ठोकर है

हाथ बंधे हैं, होंठ सिले हैं, आंखें अंधीं, बहरे कान
ख़ुद को मुर्दा देख रहे हैं; क्या नदीदा[3] मंजर है



---

[1] गो – यद्यपि
[2] संगज़र – कसौटी/निकष
[3] नदीदा – जिसे देखा न हो

ख़ास मुहाफ़िज़[1] बनते थे
और मुझे ही डसते थे

जब ढूंढा तब नहीं मिले
यूं घर में ही रहते थे

सीना ताने', जग घूमे
आईने से डरते थे

ज़ुबां सी गया एक सवाल
कितनी बातें करते थे



---

[1] मुहाफिज – रक्षक/अभिभावक

खुद भिखारी शहर ये क्या देगा
टुकड़ा फेंको अभी दुआ देगा

इसकी उसकी कहानियां लेकर
हद हुई तो ये तर्जुमा[1] देगा

रोएगा कोई, गर हुआ जिंदा
मुर्दा, मुर्दे को कांधा क्या देगा

इससे यूं आश्नाई[2] ठीक नहीं
देखना, ये कभी दग़ा देगा

ना निभे फिर भी होंगे खाक यहीं
इसके जैसा ही, दूसरा देगा

---

[1] तर्जुमा – अनुवाद
[2] आश्नाई – मैत्री संबंध

ख़ुशफ़हमी के पाल कबूतर
हरी–भरी हर डाल कबूतर

मुल्क में हरसू[1] चैन अमन
ना कोई ख़स्ताहाल कबूतर

सब्ज़बाग़ की सैर कराते
फिरते कई कमाल कबूतर

डर मत, खतरा यहां नहीं है
हैं महफ़ूज़[2] ये जाल कबूतर

और सुनो, खिसियाता शाइर
बजा रहा था गाल... कबूतर

ज़ुल्मत[3] से टकरा कर भी रख
पाया सलामत खाल कबूतर

इंसां बनकर, मर–मर' जी कर
रहा बहुत खुशहाल कबूतर

ख़िदमत[4] का धंधा करता था,
था फिर भी कंगाल कबूतर

किस्सा याद आया बचपन का
उड भागे ले' जाल कबूतर

गुटर–गुटर–गूं से अबके
ले आएंगे भूचाल कबूतर

[1] हरसू – चारों ओर/सर्वत्र
[2] महफ़ूज – सुरक्षित/निरापद
[3] ज़ुल्मत – अंधकार
[4] ख़िदमत – सेवा

गैरो से निभाएं हंस–हंस कर, अपनों से निभाना भूल गए
हमशीर[1] को हमपा[2] हमगम[3] को सीने से लगाना भूल गए

तोहमत[4] दी उन्होंने जी भर कर, वे कहते रहे, हम सुनते रहे
फ़ेहरिस्त[5] इल्ज़ामों की पेशानी[6] पर चिपकाना भूल गए

यकतरफ़ा[7] रस्मे–वफ़ा हम तो आगे भी निभाते जाएंगे
पैगाम उन्हें क़ासिद[8] के हाथ हम यह भिजवाना भूल गए

राजेन्द्र ! बहुत ही माहिर थे दिल बहलाने के हुनर में तुम
मायूस है सारी महफिल; क्या तुम दिल बहलाना भूल गए



---

1 हमशीर – एक ही मा से स्तनपान करने वाले/भाई
2 हमपा – साथी/सहयात्री
3 हमगम – दुख दर्द में सहानुभूति रखने वाला
4 तोहमत – दोषारोपण
5 फ़ेहरिस्त – सूचीपत्र
6 पेशानी – ललाट
7 यकतरफ़ा – इकतरफ़ा
8 क़ासिद – संदेशवाहक/डाकिया

घर से निकलोगे; रास्ता होगा
ग़ैरों–अपनों से सामना होगा

जा मुक़द्दर को ढूंढिएगा कहीं
वो किसी मोड़ पर खड़ा होगा

पेश ख़ूं कर दें जाम में ख़ुद ही
फिर किसी का ना हौसला होगा

राख बिखराना सह्रा में मेरी
देखना ! सह्रा गुलकदा होगा

जान; राजेन्द्र ! लिख वतन के लिए
ज़िंदा रहने का हक़ अदा होगा

चांद; वो गिरवी मेरी आंखों में धर गया
दिल क्या; पूरे वजूद[1] पर दस्तख़त[2] कर गया

ले गया मुझसे वो मेरी ज़ीस्त[3] क़र्ज़ में
यादों की सूरत, क़िस्तों में सूद[4] भर गया

घर आया मेहमां हिमाक़त[5] कर गया क्या ख़ूब
दिल से चैनो–सुकून को बेदख़ल कर गया

फ़िर आने के बहलावे से कर गया मस़रूफ़[6]
उंगलियों के पोरों पर लम्हे वो धर गया

किया उसे रुख़सत[7], है तबसे सब्र[8] भी आवारा
दिल की गलियां छोड़ गया, जाने किधर गया



---

1 वजूद – अस्तित्व/हस्ती
2 दस्तखत – हस्ताक्षर
3 जीस्त – जीवन
4 सूद – ब्याज
5 हिमाकत – अनधिकृत चेष्टा
6 मसूफ – व्यस्त
7 रुख़सत – विदा
8 सब्र – धैर्य

चाहे इक इल्ज़ाम ही आया
उनका कुछ पैग़ाम तो आया

आया नफ़रत से ही; उनके
लब पर मेरा नाम तो आया

खेल लिए, जी बहला उनका
दिल मेरा कुछ काम तो आया

गुल की एवज आए पत्थर
नेकी का इन्आम[1] तो आया

ज़हर सही, उनकी जानिब[2] से
कहने को इक जाम तो आया

अलस्सुबा[3] आना था जिसको
ढलते-ढलते शाम तो आया

बहुत दिनों से खेल था जारी
आख़िर इख़्तिताम[4] तो आया

[1] इन्आम – पुरस्कार
[2] जानिब – ओर
[3] अलस्सुबा – भोर/मुह अंधेरे
[4] इख़्तिताम – समापन

चीख रहीं वीरानियां
गुमसुम हैं आबादियां

शहर में दहशत[1] का दानव
लेता है अंगड़ाइयां

आदमज़ादे पाल रहे
हैवानी शैतानियां

झांक ज़हन[2] में लोगों के
हैरां[3] खुद हैरानियां[4]

लोग भी कितने बदगुमां[5]
क्यूं करते नादानियां !

ख़ूं–रंगे हाथों से कब
खुश होते अल्ला मियां ?

---

1 दहशत — आतक
2 जहन — मन/मस्तिष्क
3 हैरा — निस्तब्ध
4 हैरानिया — विस्मय
5 बदगुमां — बुरी धारणा रखने वाले

छूकर उनको आई हवा
मंद–मंद मुसकाई हवा

उनके आंचल–सी; मेरे ही
इर्द–गिर्द लहराई हवा

उन जैसी निष्पाप; बांध कर
अंगुलियां अलसाई हवा

मेरे आलिंगन में आकर
दुल्हन–सी शरमाई हवा

जब कपोल पर राजेन्द्र ने
अधर धरे; इतराई हवा

जामे–मय आंखों से पीना आ गया
मर गए उन पर तो जीना आ गया

हाथ का पत्थर कनारे रख दिया
तब से जीने का क़रीना आ गया

गर्म मौसिम की हवा जब झेल ली
तब से सावन का महीना आ गया

पांव मां के छू लिए हो सरनिगूं[1]
हाथ में गोया दफ़ीना[2] आ गया

नाम उसका जब तलातुम[3] में लिया
मेरी जानिब हर सफ़ीना[4] आ गया

मेरे इंसां की बलंदी देख कर
कुछ पहाड़ों को पसीना आ गया

ज़हब[5] से अश्आर[6] हैं राजेन्द्र के
लफ़्ज़[7]–लफ़्ज़ में इक नगीना आ गया

---

[1] सरनिगूं – नत–मस्तक
[2] दफ़ीना – गड़ा हुआ खजाना
[3] तलातुम – बाढ़/सैलाब
[4] सफ़ीना – नाव
[5] ज़हब – स्वर्ण/कुंदन
[6] अश्आर – कविता के छंद/गजल के शेर
[7] लफ्ज – शब्द

जिसकी कश्ती डूब गई, क्या ख़ौफ़[1] उसे तूफ़ान का
यहां तो पूरी ज़िंदगी ही सौदा है तूफ़ान का

उम्मीदों की माटी में ही चाहत के फूल खिलते हैं
लुट गई जब बारात, न रोना रहा किसी अरमान[2] का

मंदिर–मस्जिद उठने–बैठने वालों [illegible]
तब से ढूंढ रहा हूं मैं, घर अल्लाह और भगवान का

कल आया बेवक़्त, वक़्त; [illegible]
पलकें झपकूं ना झपकूं, है इंतज़ार फ़रमान[3] का

1 ख़ौफ़ – भय
2 अरमान – लालसा/इच्छा
3 फ़रमान – शाही-आदेश

जीते जी तो यहां पे होंगी कड़वी ही अनुभूतियां
मरते ही चैंटेंगी लाश से लाख सहानुभूतियां

दुआ सरल जितनी जीने की, जीना उतना सरल कहां
सांस–सांस के साथ मांगता है जीवन आहूतियां

लाख आचरण बुरा, चरित्र से मालामाल वे ही तो हैं
जेब में जिनकी भरीं ठसाठस; उपदेशक किंवदंतियां

नहीं सुधारों की गुंजाइश, चलना है सब यूं ही यहां
सुनिए ! आपको भी उपलब्ध हैं अवसरवादी नीतियां

सच्चाई अब सामने आए तो आख़िर कैसे आए
क़लम क़ैद उन हाथों में जो लिखते सिर्फ़ प्रशस्तियां

दुःख मत कर राजेन्द्र यदि वह ईश्वर तुझको नहीं मिला
भोले बेबस निरीहजन हैं उसकी ही प्रतिमूर्तियां

जीने के बहाने ढूंढ लिए, तब मौत तक़ाज़ा[1] करती है
मैं भी तो देखूं बिलआख़िर[2] तक़दीर की कितनी चलती है

जीने को तब भी जीता था, जब जीने के हालात न थे
हो अश्के–तलातुम[3], तल्ख़ी[4] हो, अपनी हर हाल में निभती है

मेले हैं दर्दो–ग़म के घर रौनक़ है मौज है, यूं कहिए,
अरमानों के झुलसे बन में भी कोई बांसुरी बजती है

दरिया धड़कन बढ़ने–घटने–रुकने से मुतअस्सिर[5] कौन हुआ
मैख़्वार[6], नमाज़ी[7] ख़ुदा बनूं; सूरत पे ज़िंदा मस्ती है



---

1. तकाजा – ऋण अदायगी की मांग
2. बिल्आख़िर – अतत:
3. अश्के–तलातुम – आंसुओं की बाढ़
4. तल्ख़ी – कड़वाहट
5. मुतअस्सिर – प्रभावित
6. मैख़्वार – शराबी (पथभ्रष्ट)
7. नमाजी – धार्मिक प्रवृति वाला

जी रहे हैं हम भी किन–किन हादसों[1] के दरमियां[2]
हैं सलामत पैर फिर भी ढूंढे हैं बैसाखियां

मंज़िलों की ख़ोज में बेकार हम भटका किए
यूं ख़बर ही थी कि मिलनी हैं वहां नाकामियां

जानता हूं पूरे होशो–हवास में वे थे मगर
बच रहे कह कर कि हो गई नींद में गुस्ताखियां[3]

क्या कहा, कि – जीत लेंगे इस जहां को प्यार से
आप भी दोहरा रहे हैं मेरी ही कुछ ग़लतियां



---

[1] हादसा – दुर्घटना
[2] दरमियां – मध्य/बीच
[3] गुस्ताखियां – धृष्टताएं

जो नुजूमी[1] ने कहा था वो बराबर निकला
दम मेरा निकला, नज़र मुझसे बचा कर निकला

कल तलक ना था गुरेज़ां[2] बाहों में भरने से
आज रस्ते में मिला; गर्दन झुका कर निकला

था कभी यकजां[3] मगर यह एक गुज़री बात है
वह मेरा साया; मगर दामन छुड़ा कर निकला

जिंदगी रंगीनियों से जिसने कल लबरेज़[4] की
हद से ज़्यादा आज वो मुझको रुला कर निकला

---

[1] नुजूमी – ज्योतिषी
[2] गुरेजां – बचकर निकलने वाला
[3] यकजां – घनिष्ठ
[4] लबरेज – पूर्णतः भर देना

झुग्गियां–झोंपड़े हम बदलते रहे
आपके बंगले दर–बंगले बनते रहे

तुमने पकड़ा गला, पांव हमने कभी
घुलते–मिलते हुए, दिन गुज़रते रहे

जोड़ते तुम बकाया, हाथ हम जोड़ते
दरमयां पुख्ता–रिश्ते पनपते रहे

खोज मेरी तुम्हें और तुम्हारी मुझे
लूटते–लुटते; मिलते–बिछड़ते रहे

मैं ज़रूरत तेरी, मेरी मजबूरी तुम
क्यूं राजेन्द्रजी नाहक उबलते रहे

टुकड़ों में बंट गए हैं पडे हैं इधर–उधर
किन–किन ठिकानों–ठौर खड़े हैं इधर–उधर

कहीं कैदखानों में, कहीं तिज़ोरियों में हम
तालों में, चौखटों में जड़े हैं इधर–उधर

अपनों से परायों से, बावज़ूहो–बेवज़ूह
किन–किन से जाने... हम भी जकड़े हैं इधर–उधर

गलियों से सरहदों से, ख़ला से बलाओं से
खुद से ज़माने से भी लडे हैं इधर–उधर

राजेन्द्र ! हस्ती अपनी कुछ नहीं जहान में
फिर भी कई बड़ों से बड़े हैं इधर–उधर

ठीक है ! आग तो ठंडी हो
लेकिन पहले रौशनी हो

बेशक बाहर तीरगी[1] है
अंदर शम्आ जलती हो

रो दे मेरे दर्द से तू
हमदर्दी; कुछ ऐसी हो

मौत मुझे मंजूर मगर
चंद दिनों तो ज़िंदगी हो

रूहें इश्क़ में मिल जाएं
इश्क न कोरा ज़ह्नी[2] हो

सामने हों बंदा परवर
राजेन्द्र ! वो बंदगी हो



---

[1] तीरगी — अंधकार
[2] ज़हनी — दिमागी

डसते हैं दिन–रात ये लम्हे
बख़्शें हर सौग़ात[1] ये लम्हे

प्यासी थी धरती; आंखों से
झर गए बन बरसात ये लम्हे

दोष नहीं औरों को; हमसे
करते अक्सर घात ये लम्हे

जीवन है शतरंज की बाज़ी
बारहा[2] देते मात ये लम्हे

राजेन्द्र क्या बतलाए; अब
बयां करे हालात ये लम्हे

---

1. सौगात – उपहार
2. बारहा – प्राय

ढह न जाए सुन ! ताश का घर
मत चिल्ला, इतना डर कर

है जिसके दिल में ईमां, फिर
उसको कैसा ख़ौफ़–ख़तर

नहीं सुनी अंधेर; देर का
उसके घर इम्कान[1] मगर

मशहूरो–मा'रूफ़ दूर तक
उसकी कलम ! क्या तेज़नज़र

नुक्ताचीं[2] ! गर फ़ुर्सत हो तो
घर की जानिब नज़रें कर

मेहरबान वह हो, तो गढ़ दे
लफ्ज़ों से ज़ेवर ज़रगर[3]

बंद आंख राजेन्द्र देख ले
बर्फ़ में शोलों का मंज़र[4]



---

1 इम्कान — समावना
2 नुक्ताचीं — आलोचक
3 ज़रगर — स्वर्णकार
4 मंज़र — दृश्य

तुझे समझने को मैं उस पर निर्भर हो गया
यार ! बात भी करना तुझसे दूभर हो गया

पिछली बार मिला तब तो, ऐसा नहीं था तू,
यद्यपि तू ओछा था; लघु से लघुतर हो गया

पीडा व्यथा छलावे सहते' कलम सिहर उठी,
कवि का मन–मस्तिष्क स्वतः ही उर्वर हो गया

तरकश बनवाली, तीर चुन–चुन कर किए इकट्ठे,
तूने झगडा छेड़ा; मैं धनुर्धर हो गया

दिन को रात, दुराग्रहवश कह' तू तो खिसक गया,
पता है ? पूरा परिदृश्य ही धूसर हो गया

एक सुबह अखबारों में राजेन्द्र छा गया,
रेगिस्तान के बीचो–बीच समंदर हो गया

✍

थक के लौट आए हम घर
देख आए सारे मंज़र

कहीं सियासत[1] की बातें हैं
कहीं चर्च मस्जिद मंदिर

इंसां को पग–पग पर खतरा
हैं हैवां महफ़ूज़[2] मगर

मिले मदरसे, मासूमों के
ज़ह्नो–दिल में भरते ज़हर

अदब अदीबों से उकताकर
जाने छुपी कहां जाकर

गली–गली बाज़ार बने हैं
हुए फनकदे[3] चकलाघर[4]

रिश्ते–नाते हुए लापता
दिल की ठौर जडे पत्थर

कोई कहीं राजेन्द्र नहीं जो
जज़बों की कुछ करे क़दर

---

1 सियासत – राजनीति
2 महफूज – सुरक्षित
3 फनकदे – कला–केन्द्र
4 चकलाघर – वेश्यालय

दर्द बेहद ही जब मचल जाए
रात बाकी हो चांद ढल जाए

जब अंधेरा हो खुल के मैं रो लूं
वहम जिंदादिली का रह जाए

पूछ लूंगा मिज़ाज मैं उनका
बस, तबीअत ज़रा संभल जाए

कह दे कोई हवा से ये जाकर
मेरी छत पर जरा ठहर जाए

गुफ़्तगू[1] हो रही सितारों से
देखें; जाकर कहां ख़बर जाए

शम्आ[2] की अहमियत[3] नहीं रहती
याद उनकी करम[4] जो कर जाए



---

[1] गुफ्तगू – वार्तालाप
[2] शम्आ – मोमबत्ती / दीपक
[3] अहमियत – महत्ता
[4] करम – कृपा

धुंधली रैन प्रभात करेंगे
नित्य सत्य से घात करेंगे

होनहार बिरवे न सही, ये
फ़िर भी चिकने पात करेंगे

सौगधे खाएंगे ऐसे
दाल चपाती भात करेंगे

शांत समुद्र मे कंकर के बल
पैदा झंझावात करेंगे

पशु नहीं ये है तो मनुज ही
लेकिन जात कुजात करेंगे

मुझे मिटाने के प्रयास में
एकमेक दिन रात करेंगे

राजेन्द्र ! मत डर, सब छलिए
कभी वास अज्ञात करेंगे

नई सदी में आकर भी जजबात[1] का रोना रोता है
तू भी नाहक ही छोटी सी बात का रोना रोता है

इंसानियत की राख भी ठंडी हुए जमाना बीत गया
मर्सिया[2] लिख कर अब क्यूं बेबात का रोना रोता है

अपने-अपने ढंग से सब देते है कयामत[3] को दावत[4]
बात-बात में क्यों तू हर हालात का रोना रोता है

अब तो जो कुछ गुज़र जाय राजेन्द्र ! समझले वो कम है
रिश्तो का, दिल का, क्यूं तअल्लुकात[5] का रोना रोता है



1 जजबात – भावनाएं
2 मर्सिया – मृतक की स्मृति में गीत
3 कयामत – प्रलय
4 दावत – आमंत्रण
5 तअल्लुकात – सबंध

नग़मा हूं दर्द का मैं, दिल सोच कर लगाना
मुझे दिल से गुनगुनाना, होंठों को मत हिलाना

जजबात[1] से मैं जनमा, पाला इसी ने मुझको
जैसे भी चाहो वैसे, मुझ से न पेश आना

दिल मेरा मोम जैसा और ओस-सा बदन है
छूना मुझे नज़र से, तुम हाथ मत लगाना

रहता हूं मैं हमेशा, ख़्वाबों के इक जहां में
आवाज़ दो मुझे तो, हौले-से ही बुलाना

माहौल की खमोशी[2], देती है सांसें मुझको
जब भी क़रीब आओ, मत पांव भी बजाना

दामन पकड़ना मेरा, दिल की सलाह लेकर
आसां न होगा मुझसे, रिश्ता कोई निभाना

दिल की किताब में गर, मुझको उतारा तुमने
लगने लगेगा तुमको, फिर ग़ैर ये ज़माना

[1] जजबात – कोमल भावनाएं
[2] खमोशी – नीरवता

नज़र के सामने हैं, बात उनसे हो नहीं पाई
रहे यूं महफिलों में हम, लिए बाहों में तनहाई

वो अक्सर सामने होते हैं मेरे जागते–सोते
भरम रहता है दिल को, हो कहीं ना उनकी परछाई

बुलाते हैं वो अक्सर, उनके घर जाने से डरता हूं
मिली पहले भी उस चौखट से मुझको सिर्फ रुसवाई[1]

लिए ख़त उनका, क़ासिद[2] आज मेरे दर पे आया है
जनाज़ा[3] उठ रहा मेरा, उन्हें तब मेरी याद आई

ख़यालों ख्वाबों, नग़मों दिल में आंखों में जो रहते हैं
वो ही कहते हैं कि राजेन्द्र से है नाशनासाई[4]

---

[1] रुसवाई – बदनामी / निंदा
[2] कासिद – पत्रवाहक
[3] जनाजा – अर्थी
[4] नाशनासाई – अपरिचय

ना देखा वो देख रहे हैं
बैठे सपने सेंक रहे हैं

मन के सागर में सुधियों के
नन्हे ककर फेंक रहे हैं

कटा कल्पना का कनकौवा
सच की डोर समेट रहे हैं

कड़ी धूप के इतने आदी
छांह हुई तो ऐंठ रहे हैं

सच के पहरेदार बने वे
सच की गरदन रेंत रहे हैं

काजल–कोठरिया में कोरे
हद से लंबी फेंक रहे हैं

जिनको हम हाथी सुनते थे
मिलकर जान गए खरहे हैं

पुर्ज़ा दस्तावेज़ बनेगा
बादल अब रंगरेज बनेगा

नया पडौसी ढील मिले से
कल—परसों चंगेज़ बनेगा

कई नामवर पहले से हैं
हर क़ातिल परवेज़[1] बनेगा

नजर पराई दौलत पर ? अब
कौन—कौन अंगरेज बनेगा

आसमान नीला—सा घोड़ा
आख़िर में शबदेज़[2] बनेगा

साथ ले लिया किसे सफ़र मे
आदमी है; बंधेज[3] बनेगा

राजेन्द्र ! तुमसे भी शह्र में
किस्सा वहशतख़ेज़[4] बनेगा



---

[1] परवेज – प्रतिष्ठित
[2] शबदेज – सियाह/मुश्की घोड़ा
[3] बधेज – अड़चन/ बाधा
[4] वहशतखेज – मय पैदा करने वाला

फूल खिलते ही गर ख़िज़ां[1] आई
क्या बहार आई ! रायगां[2] आई

आए वे; रंग लाई मेरी दुआ
हर खुशी उनके साथ यां आई

खुश्क[3] मौसम भी खुशगवार[4] हुआ
रूबरू चलकर दास्तां आई

उस परीरू[5] के मुस्कुराते ही
मुर्दा लम्हों में गोया जां आई

लब से राजेन्द्र के ग़ज़ल निकली
संग हवा गाने; शादमां[6] आई

---

1 ख़िज़ा — पतझड़
2 रायगा — व्यर्थ ही
3 खुश्क — नीरस
4 खुशगवार — मनोनुकूल
5 परीरू — परियों जैसी सुंदरी
6 शादमा — प्रसन्नचित्त

बवंडर[1] फ़ज़ा[2] में ये क्या हो रहा है
शफ़क़[3] हंस रही आसमां रो रहा है

कुंवारी हवाओं ! संभल कर गुज़रना
बरगलाने तूफ़ां तुम्हें टोह रहा है

ऐ लहरों ! लडकपन तुम्हें ले न डूबे
न यूं ही समंदर तुम्हें ढो रहा है

खुराफ़ाती[4] मौसम भी कुछ कम नहीं है
ज़मीं का जो मलमल बदन धो रहा है

तू तरसेगा फ़िर, सुन ओ अलसाए परबत !
अभी तो उनींदा पड़ा सो रहा है

हैं वादा–फ़रामोश[5] बरखा की बूंदें
तू इनकी मुहब्बत में क्यूं खो रहा है

बवंडर – आवेग भरा तूफ़ान
फ़जा – वातावरण
शफ़क – क्षितिज पर प्रात–सध्या छाने वाली लालिमा
खुराफ़ाती – शरारती
वादा–फ़रामोश – वचन देकर भूल जाने वाले

यहुत हुआ, अब यार ! तरीक़एकार[1] बदलना होगा
जंगआलूदा[2] कुंद[3] हर इक औज़ार बदलना होगा

अम्नो–सुकूं[4] से जीने–मरने की न जहां मोह्लत[5] हो
वहा हर इक ढर्रे को सौ–सौ वार बदलना होगा

दिल से दिल के बीच की खाई चौड़ाए जिन जश्नों से
बुरा लगे तो लगे, वो हर त्यौहार बदलना होगा

सुनो पुजारी और मुल्लाओं ! बहुत कमाई कर ली
अब नफरत का धंधा–कारोबार बदलना होगा

लड़ते–लड़ते सदियां–दर–सदियां गुज़रीं; क्या हल निकला
गर हालात बदलने हैं; हथियार बदलना होगा



---

1 तरीक़एकार – कार्य–प्रणाली
2 जंगआलूदा – जंग (काठ) लगे हुए
3 कुद – मोथरा
4 अम्नो–सुकूं – सुख–शांति
5 मोह्लत – छूट/अवकाश

बाहर बहता दरिया रख
भीतर पानी ठहरा रख

अंधेरे से भरे हुए
घर में गहन—उजेरा रख

दौलत माल — खजाने पर
सूरदास का पहरा रख

निगरानी में कौओं की
चिड़िया ! रैन—बसेरा रख

स्याह रात के सरहाने
उजला सपन—सवेरा रख

छील—काट सारा जंगल
सर इक बिरछ घनेरा रख

क़ासिद ! अपने झोले में
अब तो इक ख़त मेरा रख

रंग बांट दे तू सारे
इक; राजेन्द्र ! सुनहरा रख

बेअक़्ल... बिना सिर–पैर के सवाल करता था
पीता नहीं था; पर कम्बख़्त... बवाल करता था

कहता था कें पसीने की भी क़ीमत चाहिए
पागल था, जाहिल[1] था, हुंह ! कमाल करता था

'छोटे–बडे बराबर'– यह था फ़लसफ़ा[2] उसका
समझाने पर स्साला... आंखें लाल करता था

मंदिर वालो से, मस्जिद वालो से भी पंगा
बड़ा दीन–ईमां को रोटी–दाल करता था

अपनी जिद्द में लड़ा–मरा राजेन्द्र; हमको क्या
कौनसा वह हमको बडा निहाल करता था



---

[1] जाहिल – अज्ञानी
[2] फ़लसफ़ा – दर्शन

भरम ढोते रहे पैरहन[1] की तरह
सहते आए सितम हम, करम की तरह

कम न थी ज़िंदगी हादसे से मगर
गुनगुनाते रहे इक ग़ज़ल की तरह

सज्दे[2] करते रहे तक' उसे दूर से
बुतकदे[3] पर सजे इक अलम[4] की तरह

दाना[5] बनकर नहीं जीत पाते उसे
गम से मिलते रहे लडकपन की तरह

बात दिल से बयां हो, वो माद्दा कहां
बड़बड़ाते रहे सुखनवर[6] की तरह

हक में इंसान के खोखली हमग़मी[7]
गुमशुदा बच्चे की इक खबर की तरह

मेरी ग़ज़लें असर कर गईं ख़्वाब में
ज़लजले[8] से जगी इक सहर[9] की तरह



---

1 पैरहन – वस्त्र
2 सज्दे करना – माथा टेक कर श्रद्धा दर्शाना
3 बुतकदा – मंदिर
4 अलम – ध्वजा
5 दाना – अक्लमद/मेधावी
6 सुखनवर – कवि/शाइर
7 हमगमी – सहानुभूति
8 जलजला – भूकंप
9 सहर – भोर

मात्र क्रियाशील–सा दिखने का चाव है
मानवीय–दृष्टिकोण का अभाव है

लोग, अब तुलाओं के कांटों–से हो गए
जिस तरफ़ है भार, उस तरफ़ झुकाव है

पीढियों का कर रहे प्रबंध सब यहां
यायावर बिसर गए कि जग पड़ाव है

डोर हाथों से तेरे निकल गई, प्रभो !
अब जगत् को कर दे स्वाहा, यह सुझाव है

ऐ राजेन्द्र पुरातनवादी ! अब सुधर भी जा
इस युग में भी तुझको मूल्यो से लगाव है

मुझको मिटा करके दुश्मन भी मेरा बहुत पछताया था
धूप में झुलसा वह तब समझा मैं उसका ही साया था

चांदी की झंकार की हदें तय हैं जहाने–फ़ानी[1] तक
साथ चला जन्नत तक वो ईमान मेरा सरमाया[2] था

वो मेरी महबूब नहीं थी फ़िर भी जब–तब रूठ गई
क़िस्मत को इसरारो[3] – मशक़्क़त[4] से कई बार मनाया था

अंधी गलियां, अंधी सड़कें, अंधे दरीचे[5], अधे सनम
याद रहेगा; तुमने खुदा ! ऐसा भी शह्र बनाया था

ज़हर–सलीब मुअय्यन[6] थे, सुकरात–ईसा तक की ख़ातिर
क्यूं तुमने राजेन्द्र ! जहां को आईना दिखलाया था

---

1 जहाने फ़ानी – नश्वर ससार
2 सरमाया – पूजी
3 इसरार – खुशामद/हठ/जिद
4 मशक्क्त – परिश्रम/तपस्या
5 दरीचे – खिड़कियां–झरोखे
6 मुअय्यन – निश्चित/नियत

मुटियाए छरहरे लोग हैं
हैं खोटे, पर खरे लोग हैं

यहां कसीदे कढ़े लोग हैं
छोटे–छोटे बडे लोग हैं

ज्ञान बघार रहे हैं जो, वे
कुंठाओं से भरे लोग हैं

जीवन की बातें करते, वे
स्वयं मरे–अधमरे लोग हैं

गुर्राते हैं – क्यों ? औरों के
अस्तित्वों से डरे लोग हैं

अविचल ? नहीं, ध्यान से देखो
टेक लगाए खड़े लोग हैं

बरसों से परिचित हैं, लेकिन
समझ से थोडे परे लोग हैं

साधु–साधु राजेन्द्र ! जडों बिन
बरसातो बिन हरे लोग हैं

मेरा शहर है अनमना, उदास है ज़रा[1]
बात आम[2] है ये, फिर भी ख़ास[3] है ज़रा

पत्थरों को पूजते' पहाड़ हो गया
जज़्बा–ए–रहम[4] से दिल ख़लास[5] है ज़रा

अश्क ख़ून ज़हर कब से पी रहा है ये
तिश्नगी[6] है लब[7] पे अब भी प्यास है ज़रा

ना ख़ुदा किसी की सुनता ना मेरा शहर
इस लिहाज से ख़ुदा के पास है ज़रा

सी गई लबों को कब का इक बेचारगी
कसमसाए दिल में बस, भडास है जरा

मर चुका कभी का, सांस ये उधार की
सबूत तो नहीं, मेरा क़यास[8] है जरा

---

1 जरा – किंचित
2 आम – गौण
3 खास – विशेष
4 जज्बा–ए–रहम – कोमल–करुण मनोवृति
5 खलास – रिक्त
6 तिश्नगी – तृष्णा
7 लब – होंठ
8 कयास – धारणा

मेरे बारे में सोचता होगा
दर्द उसको भी कुछ हुआ होगा

गुल तो मुरझा गए होंगे कब के
गुलदस्ता अभी भी सजा होगा

रात आई, गई भी, भोर हुई
बिस्तरा ज्यूं का त्यूं धरा होगा

सबकी आंखों में वो खटकता है
शर्तिया क़द में वो बड़ा होगा

हो गई बस्तियां भले ही वीरां
दश्त[1] अब भी हरा-भरा होगा

उसकी आंखें हैं नगमगीं[2] अब तक
जीतने के लिए लड़ा होगा

---

[1] दश्त – जंगल
[2] नगमगीं – जाज्वल्यमान

मैं अक़ीदत[1] में हुआ जाता हूं दीवाना तेरा
तेरी चौखट का सवाली, आशिक़ो–शैदा तेरा

तीरगी[2] में माहरुख[3] की दीद[4] हो तो ईद हो
या इलाही रू–ब–रू आकर दिखा जल्वा तेरा

बेख़ुदी में होश में यकसू[5] तरन्नुम–तहत में
गुनगुनाए रूहो लब हर लम्हा यक नग़मा तेरा

ना हुआ पहले ना होगा कोई तेरे बाद में
हो रहा है अह्ले–दिल की बज़्म में चर्चा तेरा

ज़र्रा–ज़र्रा तेरा आशिक़ माशूक़ा है काइनात
मुझसे भी होगा कोई ना कोई तो रिश्ता तेरा



---

1 अक़ीदत – श्रृद्धा
2 तीरगी – अंधेरा
3 माहरुख़ – चन्द्र मुख
4 दीद – दर्शन
5 यकसू – निरंतर

मैं जिनसे रस्ता पूछ रहा था, ख़ुद वे नादां[1] निकले
दूर से दिलकश[2] दिखते थे मंज़र[3] वे बयाबां[4] निकले

दर्दो–ग़म की दवा पूछने मिला मैं जाकर जिनसे
वे सारे मुझसे भी कुछ ज़्यादा ही परीशां[5] निकले

अस्मत[6], दौलत के सुनते थे बड़े मुहाफ़िज[7] जिनको
देखा उन्हें क़रीब से, वे बड़े बेईमां निकले

अपना सब कुछ मान दिलो–जां सौंपे जिन्हें यक़ीं से
वक़्त ने ज्यूं–ज्यूं करवट ली वे दुश्मन–ए–जां निकले

हुए ज़ख़्म नासूर, हिफ़ाज़त पाकर उन हाथों की
दुखती रगें ख़ुरचते मेरे, ख़ास निगहबां[8] निकले

इंसानों की बस्ती में इंसां ही नजर ना आए
घर–घर में यूं ख़ुदा भी निकले, साथ ही शैतां निकले

---

1 नादां – अनभिज्ञ
2 दिलकश – चित्ताकर्षक
3 मजर – दृश्य
4 बयाबां – जगल
5 परीशां – अस्त–व्यस्त/दुखी
6 अस्मत – सतीत्व
7 मुहाफिज – रक्षक
8 निगहबां – देख–भाल करने वाले

मैंने सोचा; व्यर्थ की वह बकवास करता था
आख़िर समझा, काम वही बस ख़ास करता था

चांद चुराकर बंद गुफा में वह रख आया था
और... अमावस के दिन ख़ूब उजास करता था

नीला सुर्ख़ गुलाबी उसको नहीं सुहाता था
तभी तो जब–तब धुंआ–धुंआ आकाश करता था

धता बताकर परम्पराओं–मान्यताओं को
सदियों काता–पींजा वह कपास करता था

चरण चूमने उसके, मंज़िल चलकर आती थी
वह चलता भी नहीं था, मात्र प्रयास करता था

सबसे वह, उससे सब राजी; मैं घूरे का वासी
सिवा मेरे वह सब पर ही विश्वास करता था



मोम हूं; यूं ही पिघलते' एक दिन गल जाऊंगा
फिर भी शायद मैं कहीं जलता हुआ रह जाऊंगा

तेरे हाथों के चरागों की पनाहों में नहीं
मत भरम रखना—सफ़र मैं तय नहीं कर पाऊंगा

काट दो बाजू मेरे, मेरी ज़ुबां तक खेंच लो
फिर भी माथे पर तुम्हारे, मात मैं लिख जाऊंगा

खौफ क्यूं खाए हो मेरी आंच से नाहक ही तुम
शाम का सूरज हूं; थोडी देर में ढल जाऊंगा

यार ! निगलने से पहले देख रोटियां
खून से हैं तर–ब–तर अनेक रोटियां

बस्तियां हिन्दू–मुसलमां, जिसकी भी जलें
आग कैसी भी, कहीं हो; सेंक रोटियां

पाप बदले पुण्य में और झूठ सच बने
चमचमाती–खनखनाती फेंक रोटियां

ख़ासो–आम आसमां उथलने में लगे
लिखवाएं ग़लत–सही आलेख रोटियां

मर गया जाहिल कोई राजेन्द्र भूख से
पेट में, बस... डालता था नेक रोटियां



रात बीत गई, निकला दिन
पगडंडी के कंकड़ गिन

झांसा चपत दग़ा; दुनिया ने
कुछ तो तुझे दिया लेकिन

खा कोड़े चुपचाप, आदमी !
क्यूं घोड़े ज्यूं हा–हिन–हिन

भोज शेष भालों का, पहले
छक तो लें ये कीलें–पिन

खुले घाव मंडराएंगी रे
कई मक्खियां भिन–भिन–भिन

नाच! नचाए जितना किस्मत
धाकड़ ता धाकड़ धिन–धिन



रे ! क्याऽऽ तू मुझसे कभी मिलेगा ! क्याऽऽ तू मुझको देखेगा !
मेरे हुनर के दम पर; स्साले ! अपनी रोटियां सेंकेगा !

मैं फ़नकार; तेरी महफ़िल में रंग के लिए ज़रूरी हूं,
नीलाम करेगा, मुझको तू अपने मक़्सद[1] को बेचेगा !

मैं मज़दूर; बनाकर दूंगा तुझे तेरा घर, मैं ही फ़कत,
घर बनते ही –जानता हूं, कचरे ज्यूं मुझको फेंकेगा !

मक़्तूल[2] मैं; तू ही मुज़रिम[3] – मुंसिफ़[4] जन्मों से अपना रिश्ता,
तुझे ज़रूरी होगा जब–ज्यूं, मेरी लाश से चैंटेगा !

बदकार ! पराए–कांधे ढूंढे; अपने गुनह ढोने को तू ?
मुझ जैसों पर अपनी करतूतों की कालिख लेपेगा ?



---

1 मक़्सद – उद्देश्य
2 मक़्तूल – जिसकी हत्या कर दी गई हो
3 मुजरिम – अपराधी
4 मुंसिफ़ – न्यायकर्ता

रेत पर नक़्क़ाशियां[1] करते भी मिल जाते हैं लोग
ख़ुद वहम पाले हैं; औरों को बरगलाते हैं लोग

सहम जाएं अज़दहे[2] भी जिनकी सीरत[3] देखकर
ख़ूबरुई[4] के लिए आईने धुलवाते हैं लोग

ज़ेह्नीयत[5] अब और किस हद तक गिरेगी क्या पता
मंदिरों की फेरियों में इश्क़ फ़रमाते हैं लोग

शेख़जी ! इतनी भी ख़ुशफ़हमी[6] न पालें तो करम[7]
आप जैसों की वजह से भी भटक जाते हैं लोग

नाज़नीनों ! सोच कर करना नुमाइश[8] हुस्न की
इस शह्र में तो निगाहों से निगल जाते हैं लोग

भूल जाने की ज़माने को ज़रा आदत नहीं
जब भी जी चाहा गड़े मुर्दे उखड़वाते हैं लोग

---

1 नक्काशियां – चित्रांकन
2 अजदहे – बड़े साप
3 सीरत – जीवन–चरित
4 ख़ूबरुई – बाहरी सौन्दर्य
5 जेहनीयत – मानसिकता
6 ख़ुशफ़हमी – किसी बात, किसी व्यक्ति के प्रति अकारण अच्छा गुमान
7 करम – कृपा
8 नुमाइश – प्रदर्शन

लाख जलता रहे ये ज़माना
झूम कर गाऊंगा मैं तराना

होश में हूं, मुझे आज़मा लें
देखिए मत मेरा लडखड़ाना

साथ मेरे खुदा खुद खड़ा है
मुस्कुराए मेरा आशियाना

ऐ जमाने ! बदल भी ले खुद को
छोड़ दे आदमी को सताना

मत कहे का बुरा मानिएगा
है ज़रा–सा राजेन्द्र दीवाना

वक़्त के मंज़र[1] भी क्या-क्या गुल खिला रहे हैं
आजकल अंधे भी आईना दिखा रहे हैं

बन सके ना ज़िंदगी में आदमी इक पल जो
वे सबक़ इंसानियत के हमको पढ़ा रहे हैं

छंद लय सुर ताल – सब; जिनकी समझ से बाहर
बेसुरे बेख़ौफ महफ़िल-महफ़िल गा रहे हैं

भर गए कंक्रीट के जंगलात[2] भेड़ियों से
जो, आदमी की खाल ओढ़े मुस्कुरा रहे हैं

इतिहास गढ़ रहे कलम ले' हाथ में सत्ता की
लिख रहे मर्ज़ी से मर्ज़ी से मिटा रहे हैं

अक़्ल ही जब कुंद[3] है तो कोई क्या करेगा
आदमी होकर महज़[4] ताली बजा रहे हैं

---

[1] मंजर – दृश्य
[2] जंगलात – वन (बहुवचन)
[3] कुंद – भोथरी
[4] महज – मात्र

वक़्त के हाथों में है ख़ंजर
और सामने है मेरा सर

नेकराह होकर गुज़रा तो
क़दम–क़दम पर खाई ठोकर

फूलों की चादर; नीचे थे
अक्सर कांटे कीलें नश्तर

चौराहे ला' छोड़ गया जो
कहने का था मेरा रहबर[1]

इंसां जाने कहां गुम हुआ
सुना; कभी रहता था घर–घर

✍

[1] रहबर – मार्गदर्शक

वो मेरे पास के मकान में है
अज़दहा[1] गोया[2] गरेबान[3] में है

कहते वो– नफ़रतों का फ़न[4] सीखो
सारा सामां मेरी दुकान में है

मेरी कोशिश; बने जहां जन्नत[5]
शौक़ उनका बयाबान में है

मेरा इंसान सो नहीं जाता
तब तलक जां तुम्हारी जान में है

आईनों की भी राए पूछ कभी
शक अगर अद्ल[6] की मीज़ान[7] में है

छोड़ भी दे दरिंदगी प्यारे !
तेरा शुमार[8] अभी इंसान में है

---

1 अजदहा – बड़ा सांप
2 गोया – मानो/जैसे कि
3 गरेबान – कॉलर (गला)
4 फ़न – कला
5 जन्नत – स्वर्ग
6 अदल – न्यायाधीश
7 मीजान – तराज़ू
8 शुमार – गिनती

शाइरों की सोच का सामान तो नहीं ?
आईनों में देखिए; हैवान तो नहीं ?

लांघ कर मुझको तुम्हें जाने दूं; क्यूं जनाब ?
आदमी हूं मैं कोई पा'दान[1] तो नहीं !

मान लेंगे आप अब मेरे वजूद[2] को ?
आप में हुजूर ! वो ईमान तो नहीं !

अरे रे रेऽऽ ! लिबास[3] से बाहर न आइए !
लोग बसते हैं — शह्र वीरान तो नहीं !

कनपटी, जबड़ों में हो रही हैं हरकतें ?
हाथ में मेरा लिखा दीवान[4] तो नहीं ?

---

[1] पा'दान — सीढ़ी / जीना
[2] वजूद — अस्तित्व
[3] लिबास — कपड़े
[4] दीवान — ग़जल सग्रह

शोले, सर्द हवाएं बाहम[1]
आया कैसा संगी[2] मौसम

सुलग रही है सर्द चांदनी
सूरज की किरनें हैं पुरनम[3]

ज़हर – हवा पानी हर शै में
किसका सोग करें, किसका ग़म

बेबस तनहा वीरां खंड्हर
लगता है यह सारा आलम[4]

ज़र्रा–ज़र्रा मना रहा है
आने वाले कल का मातम

दिल का दर्द समझ ले कोई
कहां बची वो हस्ती आ'ज़म[5]

हर हालात बदलना था, पर
हुआ हर इक बाजू अब बेदम

पता नहीं पत्थर के बुत हैं,
मुर्दा हैं कें ज़िंदा हैं हम

---

1 बाहम – एक साथ
2 संगी – कड़ा/दुष्कर
3 पुरनम – आर्द्र/भीगी हुई
4 आलम – ससार
5 आ'जम – महान

सच से ज़्यादा काम न लें
अगर सुब्ह लें, शाम न लें

कहीं आग लग जाएगी
अपने सर इल्ज़ाम न लें

कांटे–सलीब हैं उसके
ईसा के इन्आम न लें

प्यासा है सुकरात अभी
नाहक़ उसका जाम न लें

कहता जो राजेन्द्र उसे
मानिंदे–इल्हाम[1] न लें

[1] मानिंदे इल्हाम – देववाणी के समान

सिले होंठ पथराई आंखें बुझा–बुझा सा है हर दिल
शहर बयाबां[1]–जंगल–सा है, ख़ौफ़ज़दा[2] है हर महफ़िल

रुका–रुका–सा वक़्त यहां पर, गली–गली सन्नाटा है
ज़िंदा लाशें दफ़्न घरों में, सड़कों–सड़कों हैं क़ातिल

बुततराश[3] हैं अंधे गूंगे भूखे औ' बुत[4] बहरे ढीठ
सूलें चुभती यहां परस्तिश,[5] और मंज़िलें हैं दलदल

सख़्त मनाही बोलने की, मुंह खोलने हंसने–रोने की
दिलों में है कुहराम,[6] और है क़ब्रिस्तानों में हलचल



---

1 बयाबां – उजाड़ वन
2 ख़ौफ़ज़दा – भयभीत/सहमी हुई
3 बुततराश – मूर्तियां बनाने वाले
4 बुत – मूर्तियां
5 परस्तिश – आराधना
6 कुहराम – हाहाकार

सुनिए जनाब ! छोड़ दीजिए मुगालता[1]
है कौनसी ज़ुबां ख़ुदा की कीजिए पता

क्या अरबी–फ़ारसी क्या हिन्दी–उर्दू क्या दरी
बेकार सब ज़ुबानें गर है प्यार लापता

बतलाइए, क्या दीन[2] माहो–आफ़ताब[3] का
यकसां[4] जहां को कर रहे वे बरकतें[5] अता

क्यूं मिल रहीं गले हवाएं सबके, सोचिए
पैग़ाम है – मिलें सभी से यूं बेसाख़्ता[6]

लगने लगे न घर जहां अगर तो फिर कहें
क़ायम तो कीजिए, मुहब्बतों से राबिता[7]

इंसानियत के वास्ते राजेन्द्र लड़ रहा
इसके सिवाय उसकी और कुछ नहीं ख़ता

---

[1] मुगालता – भ्रम
[2] दीन – धर्म
[3] माहो–आफ़ताब – चांद–सूरज
[4] यकसां – समान रूप से
[5] बरकतें – ईश्वरीय कृपा
[6] बेसाख़्ता – शीघ्रता से
[7] राबिता – संपर्क

सुलगती रेत की जानिब,[1] समंदर ! घूमने तो आ
ज़मीं के ज़ख़्मे–दिल में तू उतर कर डूबने तो आ

तुम्हें गर बस्तियां वीरान करने में महारत[2] है
तो आकर आजमा ले, आ ! मेरा घर फूंकने तो आ

नहीं हलचल कोई, वीरां[3] पड़ी है ज़िंदगी कितनी
कयामत तूफ़ां बिजली कहर बवंडर टूटने तो आ

अगरचे[4] टूट कर नाबूद,[5] मैं अरसे से हूं, लेकिन
छुपे हैं कई दफ़ीने[6], तू ये खंड्हर लूटने तो आ

कभी गुस्ताख़[7] हो दामन नहीं पकड़ा किसी का भी
न रोकूंगा तुम्हें भी, ऐ मुकद्दर ! रूठने तो आ

तुम्हारी मुफ़्लिसी[8] मिट जाएगी इक पल में, अब्र[9] ! सुन
कभी चुपके से मेरे दीदा–ए–तर[10] चूमने तो आ

हुआ करता था इक इंसां कोई राजेन्द्र; खो गया
कभी फ़ुर्सत हो, ऐ रहबर[11] ! नज़र भर ढूंढने तो आ

---

1 जानिब – ओर
2 महारत – विशेष योग्यता
3 वीरां – निर्जन
4 अगरचे – यद्यपि
5 नाबूद – विध्वस्त
6 दफ़ीने – गड़े हुए खजाने
7 गुस्ताख़ – अशिष्ट
8 मुफ़्लिसी – कंगाली
9 अब्र – बादल
10 दीदा–ए–तर – गीली–आखें
11 रहबर – पथ–प्रदर्शक

हद करते सन्नाटे, छुप कर आते हैं, शरमाते हैं
और कभी बेशर्म हो' खुल्लेआम ये लिपट जाते हैं

पग हौले से धरा कीजिए, बातें आहिस्ता कीजे
सोए हुए बेख़ौफ़ पखेरू बेचारे डर जाते हैं

दरवाज़ों पर सांकल जड़ कर छुप जाएं घर के अंदर
और देखें – खिड़की से कोई अंदर क्यूं कर आते हैं

रुनझुन, रंभाहट से, उड़ती धूल से यूं भयभीत न हों
शाम हुई है, गायें लेकर कुछ ग्वाले घर जाते हैं

पता नहीं – अफ़वाह है, सच है, लोगों से यह सुनते हैं
राजेन्द्र के शे'र ख़ूब हैं, दिल में उतर जाते हैं



हद से भी ज़रा–सा आगे वो गुज़र गया
ज़िंदा है दिमाग से वो दिल से मर गया

ज़ब्त[1] की बातें वो करता था सरे–महफ़िल[2]
मैंने कुछ कहा उसे तो वो बिफर गया

पुख़्तगी[3] के दावे उसके, निकले खोखले
आंख दिखाई तो टूट कर बिखर गया

कीजिएगा भी क्या उसका ऐसे हाल में
घर को फूंक कर जो दरिया में उतर गया

हो गया बिगड़ैल पहले से भी ज़ियादा
अफ़वाहें उछालीं – आजकल सुधर गया

हो गई वहशत[4] उसे इंसान नाम से
राजेन्द्र को पहचानने से अब मुकर गया

---

1 ज़ब्त – सहनशीलता
2 सरे–महफ़िल – सबके सामने/भरी सभा में
3 पुख़्तगी – मजबूती
4 वहशत – बिदकना

हम, बड़े कमाल करने वाले हैं हुजूर
आस्तीं में सांप हमने पाले हैं हुजूर

लूटने आए; उन्हें घर दे दिया पूरा
हादसे बस यूं ही कितने टाले हैं हुजूर

काम ना आएं तो अपनों के नहीं आएं
ग़ैर की ख़ातिर तो मरने वाले हैं हुजूर

कब ज़रूरी हो न जाने कौनसा चेहरा
लाख सांचों रूप अपने ढाले हैं हुजूर

आप क्यूं 'राजेन्द्र के दीवाने हो गए
वो तो फांसी पर लटकने वाले हैं हुजूर



हम ही जानें, हम कैसे उनके साथ निभाते आए हैं
और, इक वे हैं जो रोज़ नए इल्ज़ाम लगाते आए हैं

इक हम; उनके क़दमों में जां तक रख आए थे चुपके से
वे; मुट्ठी भर मिट्टी की भी मुश्तहरी[1] सजाते आए हैं

हमने तो ये एहसास तलक ना होने दिया कभी उनको
कें उनकी खुशी में हम अपने अरमान दबाते आए हैं

उनसे निभाने' ग़ैर तो क्या, हम नहीं हुए खुद अपने भी
वे; हंस–हंस कर ग़ैरों से मिल कर हमको जलाते आए हैं

हम वक़्ते–ज़रूरत हाज़िर थे उनके घर आंधी–तूफ़ां में
आए ही नहीं अव्वल[2] वे, आए – बर्क़[3] गिराते आए हैं



1 मुश्तहरी – विज्ञापन द्वारा प्रचार
2 अव्वल – प्रथमत
3 बर्क – बिजली

हर वक़्त दुधारी मेरे हक़ पर, क्यूं रे दाता ! क्यूं–क्यूं–क्यूं ?
सस्ता है क्या मेरा पसीना ?... और उससे भी सस्ता ख़ूं ?

दौलतवाले ! मेहनतकश की मज़दूरी तो देना सीख !
घिसूं हड्डियां तेरे घर; झोली कहीं और जा फैलाऊं ?

लगती है भूख सभी को, समझा ? परबत बने हुए पुतले !
तुझमें माद्दा[1] नहीं; पेट के आगे है सर निगूं–निगूं[2] !

आंख–जीभ कैंची; चक्करघिन्नी ज्यूं तेरा दिमाग चले !
हंटर हाथों में चले, कान ना चले न रेंगे इन पर जूं ?

छोटा ही सही पर भीख या चंदा कब मांगा मैंने तुझसे ?
हक़ की मजूरी देते क्यूं एहसान[3] जताता है रे तूं ?



[1] माद्दा – सामर्थ्य
[2] निगूं – नत/झुका
[3] एहसान – उपकार

हाथ मारें, और... हवा के नश्तरों को नोच लें
जो नज़र में चुभ रहे, उन मंज़रों को नोच लें

शौक से जाएं कहीं, पर... दर–दरीचे[1] तोल कर
झूलते हाथों के पागल–पत्थरों को नोच लें

मुद्दतों से दूरियां गढने में जो मशगूल[2] हैं
खोखले ऐसे रिवाजों–अधमरों को नोच लें

छोड़ कर इंसानियत शैतां कभी बन जाइए
बरगलाते हैं जो, ऐसे रहवरों को नोच लें

जो ग़ज़ल की सल्तनत को मिल्कियत ख़ुद की कहें
उन, तबीअत–नाज़िआना शाइरों को नोच लें

जो कहा राजेन्द्र ने अपनी समझ से ठीक था
वरना उसके फलसफ़े[3] को, मश्वरों[4] को नोच लें



1 दर–दरीचे – दरवाजे–खिड़किया
2 मशगूल – व्यस्त
3 फलसफा – दर्शन
4 मश्वरा – सुझाव

अगला ख़त छूते ही घुल गई इत्र की गमक हवाओं में !
संतूर की मीठी झन–झन सुनाई देने लगी फ़ज़ाओं में !

अच्छा..., तो यह उसका ख़त है ! सबसे छुपा कर रखना है !
जब घर में सब सो जाएंगे, तब चुपके–छुपके पढ़ना है !

जाने कब वो आ बैठी, पहलू में मेरे चुपके से !
जिसके साथ खुली आंखों, कुछ सपने मैंने देखे थे !

उस कमसिन नाज़ुक गुड़िया को, ना भूल सकूंगा जीवन भर !
प्यार दिया जिसने जी भर कर, तडपाया भी जी भर कर !

पंख लगा इक घोड़ा बन कर, वक़्त गुज़रता चला गया !
आख़िर वह दिन आया, जब तक़दीर के हाथों छला गया !

फ़िर... शहनाई थी, मातम था... और आंसू थे, अफ़साने थे !
फ़िर मिलन–जुदाई की घड़ियां थीं और बेबस दीवाने थे !

...

हाय रे जालिम कासिद[1] ! तू सारे ख़त ऐसे ही लाया ?
क्या बीतेगी पढ–पढ कर दिल पर रहम तुझे कुछ ना आया ?

...

कांपते हाथों' दिल ने फ़िर हर ख़त पे निगाह उडती डाली !
कहीं दग़ा नाकामी, कहीं ख़ुदग़रज़ी की छाया काली !

कुछ तड़पते अरमां, बुझी उम्मीदें तो कुछ टूटे सपने थे !
ग़ैर न थे लिखने वाले भी सबके ही सब अपने थे !

...

अभी तलक ना ख़त्म हुआ कुछ वही सिलसिला जारी है !
वही हजारो रात से लंबी रात अभी तक जारी है !

ना होंगे ख़त्म ख़ुतूत[2] कभी कें इनका आना जारी है !
दिल का दर्द भी जारी है ! अभी ज़िन्दगी जारी है !

---

[1] कासिद – डाकिया/पत्रवाहक
[2] ख़ुतूत – पत्र

कुंदन की तरह

धौंकनी सांसों की यह चलती रही !
ज़िंदगी अंगीठे–सी जलती रही !

गल गए सोने से सपने, साथ मे,
हड्डियां सुहागे–सी गलती रहीं !
कोयलों से राख; अरमां हो गए,
राख भी तेज़ाब से धुलती रही !

गल गया तो सब्र[1] के रेजे में ढल गया,
हथौड़ियां तब तंज़[2]–सी पड़ती रहीं !
जंतली में बेबसी खिंचती रही
तार–तार हो' हसरतें कटती रहीं !

गल के तप के पिट के कुंदन की तरह,
जिंदगी मेरी निखरती ही रही !!



---

[1] सब्र – धैर्य
[2] तंज़ – ताने

अजनबी

हर गली अजनबी !
हर मकां अजनबी !
इस शहर की सभी ,
बस्तियां अजनबी !

हर कली अजनबी !
गुलिस्तां[1] अजनबी !
तितलियां अजनबी !
बाग़बां[2] अजनबी !

किस शहर किस गली,
किससे जाकर मिलूं ?
मेरी खातिर तो,
सारा जहां अजनबी !

चाहे मयखाने, मय्यत
के मस्जिद गया !
मैं जहां भी रहा,
बस रहा अजनबी !

रात हो, दिन हो
तनहाई[3] हो, भीड हो ।
मैं परीशां[4] रहा,
या रहा अजनबी !!

---

[1] गुलिस्ता – उद्यान
[2] बागबा – माली
[3] तनहाई – एकाकीपन
[4] परीशा – व्याकुल

...ना मिला

दिल को सुकून,
रूह को आराम ना मिला।
दर–दर की खाई ठोकरें...
पर काम ना मिला !

सबको मिला;
मुझे वो सुबहे–शाम ना मिला।
मांगा खुदा से जो भी,
वो तमाम ना मिला ।

कुछ ख़ास ना मिला मुझे,
कुछ आम ना मिला ।
अरसा हुआ...
कोई दुआ सलाम ना मिला !

मेरे किसी आग़ाज[1] को,
अंजाम[2] ना मिला !
माया भी ना मिली मुझे,
और राम ?
...ना मिला !!

[1] आगाज – प्रारम्भ
[2] अजाम – परिणाम

इंसान को बेचूं ?

अस्मत[1] को नीलाम करूं मैं ?
या ईमान को बेचूं ?
बहुत बड़ी उलझन में हूं,
किस-किस सामान को बेचूं ?

किस ख़्वाहिश को रहन[2] रखूं ?
किस-किस अरमान को बेचूं ?
सुकूने-दिल[3] को कहां ?
कहां दिल के तूफ़ान को बेचूं ?

ज़िंदा रहना जुर्म;
सजा में जिस्म कें जान को बेचूं ?
या अब मैं भी
अपने अंदर के इंसान को बेचूं ?



---

[1] अस्मत — आबरू
[2] रहन — गिरवी
[3] सुकूने-दिल — मन की शांति

आशियां

ताज या रेत का,
घरौंदा इक खरीदें !
जी सकें मर सकें,
आशियां[1] इक ख़रीदें !

इस शहर की हसीं–,
बस्तियां सब ख़रीदें !
यह ज़मीं तो ज़मीं,
आसमां तक ख़रीदें !

बस चले – धूप का,
हर निशां तक ख़रीदें !
चांद की चांदनी,
ये हवा; सब ख़रीदें !

बेच कर अपना ईमां,
गुनाह कुछ ख़रीदें !
इक अदद हम भी अपना,
मकां अब ख़रीदें !!

[1] आशिया – घोंसला/घर/रहने का ठिकाना

रीत तुम्हारे शह्र की

बस्ती–बस्ती बयाबान[1] था,
गली–गली गुमसुम–गुमसुम !
चप्पा–चप्पा चुप–चुप सा था,
मौन–मौन से सब मौसम !

रीत तुम्हारे शह्र की
दुनिया भर से जुदा–जुदा–सी थी !
फूल तड़पते प्यासे–प्यासे
आंखों में सजती शबनम !

मुस्कानें भूलीं सी कलियां,
धूप भी थी मैली–मैली !
चहक परिंदों की गुम–ग़ुम थी,
गुलशन–गुलशन इक मातम !

आग लगाती लगी चांदनी,
पतझड़ सी बदहाल बहार !
रोई–रोई रुत फागुन की,
शोले दहकाता सावन !

जो, जिसका था, कहां था उसका ?
पास था वह था सबसे दूर !
सुकूं[2], इबादत[3] से गायब था,
ख़ुदा भी अपने घर से गुम !!

---

[1] बयाबान – जगल
[2] सुकू – शाति/सतोष
[3] इबादत – पूजा–अर्चना

* 100/आईनों में देखिए

...क्या करे ?

शैतानों की बस्ती में
कोई भी इंसां क्या करे ?
आंख का आंसू क्या करे ?
हाय दिल का जज़्बा क्या करे ?

रंगीं–फूलों के गुलदस्ते हाथ में,
दिल में ज़हर भरा,
समझ न पाए जिन्हें खुदा,
तो बेबस बंदा क्या करे ?

ख़ून पिए जबडों पर चिपके होठों पर
हैं मुस्कानें,
बहकावे मे ना आए तो,
कोई नादां क्या करे ?

इस दुनिया का पूरा का पूरा ही चलन
बदलना है,
मगर कोई तैयार न हो तो
एक अकेला क्या करे ?!

इंसां

मिल कर गया वो अच्छा था !
कितना सीधा, सच्चा था !

उसने जितनी बातें कीं,
उनका ऊंचा दर्जा था !

ख़ूब हुनर वाला था वह,
फ़िर भी सादा लहजा था !

बेशक वह नाकाम रहा,
लेकिन धुन का पक्का था !

था ज़्यादा ही जज़बाती,
थोड़ा दिल का कच्चा था !

शैतानों के बीच फंसा
एक अकेला इंसां था !!



गुमगश्त

किसके क़दमों की आहट थी ?
कौन पास से गुज़र गया !
किन पैरों के निशां पड़े हैं !
कौन यहां से किधर गया ?!

सुनी हुई सी आहट है ये,
जाने–पहचाने से निशां !
यह कैसी अनबूझ पहेली,
गया है आख़िर कौन कहां ?!

शायद वह पास ही रहता था !
शायद वह रास्ता भटका था !
शायद वह किसी की ख़ोज में था !
शायद वह किसी से रूठा था !!

पता लगाएं बिलआख़िर वह...
किस–किसका क्या लगता था ?
कभी किसी का हमदम था... ?
गुमगश्त[1] शख्स किस घर का था ?

खोज–ख़बर की... पता चला,
वह जहां में बिलकुल तनहा था !
सीने में कसक ले चला जो...
वह, इंसानियत का जज़्बा[2] था !!

गुमगश्त – खोया हुआ
जज्बा – मनोवृति

मैं वही...

उजड़ा हुआ चमन हूं मै, मैं रूठी हुई बहार हूं !
सूखी हुई नदी हूं मैं, और... कश्ती बिन पतवार हूं !

टूटा हुआ हूं इक शीशा, मैं फेंकी हुई किताब हूं !
बुझता हुआ चराग़ हूं, इक मसला हुआ गुलाब हूं !

पानी फिरी उमीद हूं मैं, खोयी हुई पहचान हूं !
हारी हुई हूं इक बाज़ी, मैं भूली-सी दास्तान हूं !

नग़मा हूं इक उदास-सा, मैं वीरां पडी मज़ार हूं !
सुन कर भी ना सुनी गई जो, मद्धम-सी वो पुकार हूं !

भूली हुई-सी मंज़िल हूं मैं, भटकी हुई तलाश हूं !
अपने कांधे चढ कर खुद, मरघट पहुंची वो लाश हूं !

दर्द का हूं मैं अफ़साना, मैं अश्कों की सौग़ात हूं !
भूल चुका है जिसे ज़माना, मैं वही जज़बात हूं !



ज़िंदगी

ज़िंदगी दर्द का फसाना है !
हर घड़ी सांस को गंवाना है !
जीते रहना है, मरते जाना है,
ख़ुद को खोना है, ख़ुद को पाना है !

चांद–तारे सजा तसव्वुर[1] में,
तपते सहरा[2] में चलते जाना है !
जलते शोलों के दरमियां[3] जाकर,
बर्फ़ के टुकड़े ढूंढ लाना है ।

तय है अंजाम[4] हर तमन्ना का,
गोया पत्थर पे गुल खिलाना है !
बुत के आगे है ग़म बयां करना,
और... पत्थर से दिल लगाना है ।

दर्द बांटे किसी का क्या कोई,
दर्द साये से भी छुपाना है ।
ले के तूफ़ान ख़ुद ही कश्ती पर,
बीच मंझधार में उतर जाना है ! !

---

[1] तसव्वुर – सजीव कल्पना
[2] सहरा – जंगल
[3] दरमियां – बीच में
[4] अंजाम – परिणाम

जी !

जी कर जी, मर–मर कर जी !
बेडर जी, डर–डर कर जी !
तप कर जी, ठर–ठर कर जी !
डूब जा, पार उतर कर जी !

काम–काम कर–कर कर जी !
हाथ, हाथ पे धर कर जी !
उजड–उखड़, बन–ठन कर जी !
पंख बांध, फर–फर कर जी !

या मौला, हर–हर कर जी !
इंसां ! इंसां बन कर जी !!

या मालिक !

जीने के हालात अता कर !
सांसों की सौगात अता कर !

ख़ौफ़ज़दा लम्हों की दख़्ल से
दूर हों वे दिन–रात अता कर !
पत्थर लेकर घूम रहे, उन
लोगों को जज़बात अता कर !

फ़रामोश जो, उनके दिमागो–
दिल को एहसासात अता कर !
कहीं मिले इंसां तो उसको
इश्रतो–इनायात अता कर ।

या मालिक ! शैतानों को अब,
तू ही शिकस्तो–मात अता कर !!
जीने के हालात अता कर !!!



जन्नत बनाएं; चलो !

आसमां को ज़रा तो झुका दीजिए !
या समंदर का पैदा हिला दीजिए !
जंग से आप नक़्शा बदल पाएं तो,
ज़िंदगानी को मह्शर[1] बना दीजिए !

गंध बारूद की है हवा में अभी,
माचिसें–तीलियां सब छुपा दीजिए !
राख का ढेर बन जाए ना, ये जहां,
मत शरारों[2] को ज़्यादा हवा दीजिए !

मस्जिदो–चर्च से भी बडा है ये दिल,
नफ़रतों को यहां से हटा दीजिए !
काम मज़हब को दहशत से कोई नहीं,
जग की आयतों को मिटा दीजिए !

ज़िंदगी तो है तोहफा खुदा का सुनो !
शेख़जी ! अपना फ़तवा[3] जला दीजिए !
आदमी, आदमी का पिए गर लहू,
क्या करेंगे दरिंदे ? बता दीजिए !

इस ज़मीं पर ही जन्नत बनाएं; चलो !
बस खुलूसो[4]–मुहब्बत 'जमा कीजिए !!

---

[1] महशर – प्रलय/क़यामत का मैदान
[2] शरारा – चिंगारी
[3] फ़तवा – धर्मादेश
[4] खुलूस – निश्छलता/सच्चाई

...तब जन्नत बन जाएगा !

हिन्दू कहां जाएगा प्यारे ! कहां मुसलमां जाएगा ?
इस मिट्टी में जनमा जो, आख़िर वो यहीं समाएगा !

ये हिन्दू है ! ये है मुस्लिम !
ऊपरवाला कब कहता ?
आदम की औलाद ! तू कब तक़्सीम[1] से आजिज़[2] आएगा ?

ना बुतख़ाने राम क़ैद,
ना क़ैद हरम मे ख़ुदा कहीं !
पाकदिली से जहां पुकारो, वहीं सांई मिल जाएगा !

तेरा–मेरा क्यूं करता है ?
साथ तेरे क्या जाएगा ?
दौलत–हुस्न–ज़मीं का टुकड़ा, सभी धरा रह जाएगा !

पाक–कलाम पढ़ेगा मोमिन, कभी शिवाले में जाकर;
कभी बिरहमन अल्लाह के घर भजन–वाणियां गाएगा !
दूर किसी कोने में उस दिन,
शैतां जा छुप जाएगा !
इसी ज़मीं का जर्रा–ज़र्रा तब जन्नत बन जाएगा !

---

1 तक़्सीम – बटवारा
2 आजिज आना – ऊबना

रास्ते अपने तू चल...

अपने होंठों की हंसी... किसी और लब पे निसार कर !
दिल किसी का भी दुखे वो काम, मत ऐ यार कर !
ना किया तूने करिश्मा... बो तू अबके बार कर !
जीत ले दुनिया तू... अपने दुश्मनों से प्यार कर !!

दुश्मनों की दुश्मनी का.. खौफ़ क्यो रह जाएगा ।
तू गले उनको लगाने... उनके घर जो जाएगा ।
मिट न पाएगी कभी... रंजिश, दिलों के जहर से,
हां..., मगर खुद तू ही... आखिर, एक दिन मिट जाएगा !!

तू यहां आया है गर... तो नाम कुछ करता ही जा !
याद रखे ये जहां.. तू काम वो करता ही जा ।
हो जरा औरों को... तेरे होने का एहसास भी,
भर सके खुशियों से गर.. दामन हर इक भरता ही जा !!

दूसरों के अश्क... अपनी आंख से बहने भी दे !
अपने दिल को... दूसरों के दर्द तू सहने भी दे ।
दुनिया दीवाना कहे.. तुझको, तू मत परवाह कर;
रास्ते अपने तू चल... कहते.. उन्हें कहने भी दे !!

